



12077CH03

द्वितीयः पाठः

मातुराज्ञा गरीयसी

भारतीय संस्कृति माता-पिता तथा गुरु को देवता की तरह पूजनीय एवं देवतुल्य मानती है। उपनिषद् काल से ही इन की महत्ता प्रतिपादित की गई है। न केवल भारतीय संस्कृति अपितु समस्त विश्व में माता को अत्यन्त पूजनीय तथा उनके आज्ञापालन को परम धर्म के रूप में प्रतिपादित किया गया है। महाभारत के यक्षोपाख्यान में भी माता को जो भूमि से भी गुरुतर बतलाया गया है, उसके पीछे भी यही रहस्य है।

प्रस्तुत पाठ महाकवि भास विरचित प्रतिमा-नाटक से लिया गया है। संस्कृत के महान् नाटककार भास ने कैकेयी के प्रति जो राम की निष्ठा एवम् आदरभावना प्रस्तुत की है-वह इतिहास में अद्वितीय है। राम के राज्याभिषेक न होने देने में तथा उन्हें वनवास दिलाने में कैकेयी कारण है-यह जानकर भी राम कैकेयी माता की उस आज्ञा को भी हितकारिणी ही मानते हैं।

(प्रविश्य)

काञ्चुकीयः - परित्रायतां परित्रायतां कुमारः।

रामः - आर्य! कः परित्रातव्यः।

काञ्चुकीयः - महाराज!

रामः - महाराजः इति। आर्य! ननु वक्तव्यम्। एकशरीर-संक्षिप्ता पृथिवी रक्षितव्येति। अथ कुत उत्पन्नोऽयं दोषः?

काञ्चुकीयः - स्वजनात्।

रामः - स्वजनादिति। हन्त! नास्ति प्रतीकारः।

शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।

कस्य स्वजनशब्दो मे लज्जामुत्पादयिष्यति॥१॥

काञ्चुकीयः - तत्र भवत्याः कैकेय्याः।

- रामः - किमम्बायाः, तेन हि उदकेण गुणेनात्र भवितव्यम्।
- काञ्चुकीयः - कथमिव?
- रामः - श्रूयताम्,
यस्याः शक्रसमो भर्ता मया पुत्रवती च या।
फले कस्मिन् स्पृहा तस्या येनाकार्यं करिष्यति॥2॥
- काञ्चुकीयः - कुमार! अलमुपहतासु स्त्रीबुद्धिषु स्वमार्जवमुपनिक्षेप्तुम्। तस्या एव
खलु वचनात् भवदभिषेको निवृत्तः।
- रामः - आर्य! गुणाः खल्वत्र।
- काञ्चुकीयः - कथमिव?
- रामः - श्रूयताम्,
वनगमननिवृत्तिः पार्थिवस्यैव ताव-
न्मम पितृपरवत्ता बालभावः स एव।
नवनृपतिविमर्शो नास्ति शङ्का प्रजाना-
मथ च न परिभोगैर्वञ्चिता भ्रातरो मे॥3॥
- काञ्चुकीयः - अथ च तयाऽनाहूतोपसृतया भरतोऽभिषिच्यतां राज्य इत्युक्तम्
अत्राप्यलोभः?
- रामः - आर्यः! भवान् खल्वस्मत्पक्षपातादेव नार्थमवेक्षते। कुतः,
शुल्के विपणितं राज्यं पुत्रार्थे यदि याच्यते।
तस्या लोभोऽत्र नास्माकं भ्रातृराज्यापहारिणाम्॥
- काञ्चुकीयः - अथ.....
- रामः - अतः परं न मातुः परिवादं श्रोतुमिच्छामि। महाराजस्य वृत्तान्तस्तावद-
भिधीयताम्।
- काञ्चुकीयः - ततस्तदानीम्,
शोकादवचनाद् राज्ञा हस्तेनैव विसर्जितः।
किमप्यभिमतं मन्ये मोहं च नृपतिर्गतः॥5॥

रामः - कथं मोहमुपगतः।

(नेपथ्ये)

कथं कथं मोहमुपगत इति।

यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयाम्॥

रामः - (आकर्ण्य पुरतो विलोक्य)

अक्षोभ्यः क्षोभितः केन लक्ष्मणो धैर्यसागरः।

येन रुष्टेन पश्यामि शताकीर्णमिवाग्रतः॥६॥

(ततः प्रविशति धनुर्बाणपाणिर्लक्ष्मणः)



लक्ष्मणः - (सक्रोधम्) कथं कथं मोहमुपगत इति।

यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयां

स्वजननिभृतः सर्वोप्येवं मृदुः परिभूयते।

अथ न रुचितं मुञ्च त्वं मामहं कृतनिश्चयो

युवतिरहितं लोकं कर्तुं यतश्छलिता वयम्॥७॥

- सीता - आर्यपुत्र! रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम्। अपूर्वः खल्वस्यायासः।
- रामः - सुमित्रामातः! किमिदम्?
- लक्ष्मणः - कथं कथं किमिदं नाम।
क्रमप्राप्ते हते राज्ये भुवि शोच्यासने नृपे।
इदानीमपि सन्देहः किं क्षमा निर्मनस्विता॥8॥
- रामः - सुमित्रामातः! अस्मद्राज्यभ्रंशो भवत उद्योगं जनयति। आः अपण्डितः
खलु भवान्।
भरतो वा भवेद् राजा वयं वा ननु तत् समम्।
यदि तेऽस्ति धनुश्शलाघा स राजा परिपाल्यताम्॥9॥
- लक्ष्मणः - न शक्नोमि रोषं धारयितुम्। भवतु भवतु। गच्छामस्तावत्। (प्रस्थितः)
- रामः - त्रैलोक्यं दग्धुकामेव ललाटपुटसंस्थिता।
भृकुटिर्लक्ष्मणस्यैषा नियतीव व्यवस्थिता॥10॥
सुमित्रामातः! इतस्तावत्।
- लक्ष्मणः - आर्य! अयमस्मि।
- रामः - भवतः स्थैर्यमुत्पादयता मयैवमभिहितम्। उच्यतामिदानीम्।
ताते धनुर्न मयि सत्यमवेक्ष्यमाणे
मुञ्चानि मातरि शरं स्वधनं हरन्त्याम्।
दोषेषु बाह्यमनुजं भरतं हनानि
किं रोषणाय रुचिरं त्रिषु पातकेषु॥11॥
- लक्ष्मणः - (सवाष्पम्) हा धिक्! अस्मानविज्ञायोपालभसे।
यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः।
वर्षाणि किल वस्तव्यं चतुर्दश वने त्वया॥12॥

- रामः - अत्र मोहमुपगतस्तत्रभवान्। हन्त! निवेदितमप्रभुत्वम्। मैथिलि!
मङ्गलार्थेऽनया दत्तान् वल्कलांस्तावदानय।
करोम्यन्यैर्नृपैर्धर्मं नैवाप्तं नोपपादितम्॥13॥
- सीता - गृह्णात्वार्यपुत्रः।
- रामः - मैथिलि! किं व्यवसितम्?
- सीता - ननु सहधर्मचारिणी खल्वहम्।
- रामः - मयैकाकिना किल गन्तव्यम्।
- सीता - अतो नु खल्वनुगच्छामि।
- रामः - वने खलु वस्तव्यम्।
- सीता - तत् खलु मे प्रासादः।
- रामः - श्वश्रूश्चशुरशुश्रूषापि च ते निर्वर्तयितव्या।
- सीता - एनामुद्दिश्य देवतानां प्रणामः क्रियते।
- रामः - लक्ष्मण! वार्यतामियम्।
- लक्ष्मणः - आर्य! नोत्सहे श्लाघनीये काले वारयितुमत्र भवतीम्।

शब्दार्थाः

- मातुराज्ञा - मातुः + आज्ञा, मातुरादेशः = माता की आज्ञा।
- गरीयसी - श्रेष्ठा, श्रेष्ठ है।
- परित्रायताम् - रक्ष्यताम्, बचाओ।
- परित्रातव्यः - रक्षणीयः रक्षा के योग्य।
- वक्तव्यम् - कथयितव्यम्, कहना चाहिए।
- एकशरीरसंक्षिप्ता - एकमात्रस्थिता, एक शरीर में स्थिता।
- स्वजनात् - स्वसदस्यात्, अपने (ही) व्यक्ति से।
- प्रतीकारः - निवारणम्, निवारण (रोकथाम)।

| | |
|----------------------|--|
| शरीरेऽरिः | - शरीरे + अरिः। |
| शरीरे | - देहे, शरीर में। |
| अरिः | - शत्रुः, शत्रु। |
| प्रहरति | - प्रहारं करोति, प्रहार करता है। |
| उत्पादयिष्यति | - जनयिष्यति, उत्पन्न करेगा। |
| तत्रभवत्याः | - सम्मानयोग्यायाः, आदरणीया का/के। |
| कैकेय्याः | - कैकेयी का। |
| उदकेण | - परिणाम वाले से। |
| गुणेन | - गुण से। |
| श्रूयताम् | - आकर्ण्यताम्, सुनिए। |
| शक्रसमः | - इन्द्रतुल्यः, इन्द्र के समान। |
| स्पृहा | - कामना। |
| आर्जवम् | - सारल्यम्, सीधापन। |
| उपनिक्षेप्तुं | - रक्षितुम्, रखना। |
| निवृत्तः | - अवरुद्ध, रुक गया। |
| पितृपरवत्ता | - पितुरधीनता, पिता की अधीनता। |
| अनाहूतोपसृतया | - अनाहूतप्राप्तया न + आहूतया + उपसृतया बिना बुलाए समीप पहुँची हुई। |
| इत्युक्तम् | - इति निगदितम्, इति उक्तम् = ऐसा कहा। |
| अत्राप्यलोभः | - अत्रापि लोभाभावः, अत्र + अपि + अलोभः, इसमें भी लोभ नहीं। |
| खल्वस्मत्पक्षपातादेव | - खलु + अस्मत् + पक्षपाताद् + एव, पक्षपात से ही। |
| नार्थमवेक्षते | - न + अर्थम् + अवेक्षते (पश्यति) वास्तविकता को नहीं देखता यथार्थ न पश्यति। |
| विपणितम् | - दातुं प्रतिज्ञातम्, देने के निमित्त। |
| पुत्रार्थे | - पुत्रनिमित्तम्, पुत्र के निमित्त। |
| याच्यते | - अर्थ्यते, माँगा जा रहा है। |

| | |
|----------------------|---|
| लोभोऽत्र | - लोभः + अत्र = यहाँ लोभ। |
| नास्माकम् | - न + अस्माकम् = हमारा नहीं। |
| भ्रातृराज्यापहारिणम् | - भ्रातृराज्यस्य अपहारिणम् भाई के राज्य का अपहरण करने वालों का। |
| परिवादम् | - निन्दाम्, निन्दा को। |
| वृत्तान्तः | - वार्ता, समाचार। |
| अभिधीयताम् | - कथ्यताम्, कहिए। |
| तावत् | - तो, अभी। |
| शोकात् | - दुःखात्, दुःख से। |
| अवचनात् | - वचन राहित्यात्, न कहने से। |
| हस्तेनैव | - हस्तेन + एव, करेणैव, हाथ से ही (इशारे से ही)। |
| विसर्जितः | - निवर्तितः, विदा किया। |
| किमपि | - किम् + अपि, कोई। |
| अभिमतम् | - अभीष्टम्, अभीष्ट। |
| मन्ये | - स्वीकरोमि, मैं (ऐसा) मानता हूँ। |
| मोहम् | - मूर्च्छाम्, मूर्च्छा को। |
| गतः | - प्राप्तः, प्राप्त हुआ। |
| उपगतः | - अधिगतः, प्राप्त हुआ। |
| अक्षोभ्यः | - क्षुब्ध न होने वाला। |
| धैर्यसागरः | - धैर्यसमुद्रः, धैर्य का समुद्र। |
| रुष्टेन | - क्रुद्धेन, क्रुद्ध से। |
| शताकीर्णम् | - सैकड़ों लोगों से व्याप्त। |
| सहसे | - सहनं करोषि, सहन करते हैं। |
| स्वजननिभृतः | - आत्मीयजनों के प्रति विनययुक्त। |
| सर्वोऽप्येवम् | - सर्वः + अपि + एवम्, सब ही ऐसा। |
| मृदुः | - कोमल। |

| | | |
|----------------------|---|--|
| परिभूयते | - | तिरस्क्रियते, तिरस्कार को प्राप्त होता है। |
| कृतनिश्चयः | - | विहितनिश्चयः, कर लिया है निश्चय जिसने। |
| युवतिरहितम् | - | स्त्रीरहितम्, युवतियों से रहित। |
| छलिताः | - | वञ्चिताः, ठगाये गये। |
| अपूर्वः खल्वस्यायासः | - | खलु + अस्य + आयासः, इसका प्रयास निश्चय ही आश्चर्यजनक है। |
| क्रमप्राप्ते | - | क्रमशः प्राप्ता। |
| शोच्यासने | - | शोकयुक्ते आसने शोक योग्य आसन पर। |
| निर्मनस्विता | - | निस्तेजस्विता, हृदयशून्यता। |
| अस्मद्राज्यभ्रंशः | - | हमारे राज्य का विनाश होगा। |
| धनुःश्लाघा | - | धनुर्विद्या में आत्मस्तुति। |
| परिपाल्यताम् | - | रक्षा कीजिए। |
| दग्धुकामेव | - | दग्धुकामा + इव, भस्मसात्कर्तुकामा, मानो जलाने की इच्छा वाली। |
| स्थैर्यम् | - | स्थिरता। |
| उत्पादयता | - | उत्पन्न करने वाले के द्वारा। |
| मयैवमभिहितम् | - | मया + एवम् + अभिहितम्, मैंने ऐसा कहा। |
| अविज्ञायोपालभसे | - | अविज्ञाय + उपालभसे, विना जाने उपालम्भ देते हो। |
| निवेदितम् | - | कथितम्, प्रकट कर दिया। |
| अप्रभुत्वम् | - | असामर्थ्य को। |
| नैवाप्तम् | - | न + एव + आप्तम्, नैव प्राप्तम्, प्राप्त नहीं किया। |
| नोपपादितम् | - | न उपपादितम्, न सम्पादितम्, नहीं किया। |
| गृह्णात्वार्यपुत्रः | - | गृह्णातु + आर्यपुत्रः = आर्य पुत्र स्वीकार करें। |
| आर्यपुत्रः | - | पति के लिए सम्बोधन। |
| मयैकाकिना | - | मया + एकाकिना, मेरे अकेले के द्वारा। |
| निर्वर्तयितव्या | - | निवर्तनीया, करनी चाहिए। |
| वार्यताम् | - | निवार्यताम्, रोको। |

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) एकशरीरसंक्षिप्ता का रक्षितव्या?
- (ख) शरीरे कः प्रहरति?
- (ग) स्वजनः कुत्र प्रहरति?
- (घ) कैकेय्याः भर्ता केन समः आसीत्?
- (ङ) कः मातुः परिवादं श्रोतुं न इच्छति?
- (च) केन लोकं युवतिरहितं कर्तुं निश्चयः कृतः?
- (छ) प्रतिमानाटकस्य रचयिता कः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) रामस्य अभिषेकः कथं निवृत्तः?
- (ख) दशरथस्य मोहं श्रुत्वा लक्ष्मणेन रोषेण किम् उक्तम्?
- (ग) लक्ष्मणेन किं कर्तुं निश्चयः कृतः?
- (घ) रामेण त्रीणि पातकानि कानि उक्तानि?
- (ङ) रामः लक्ष्मणस्य रोषं कथं प्रतिपादयति?

3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) मया एकाकिना गन्तव्यम्।
- (ख) दोषेषु बाह्यम् अनुजं भरतं हनानि।
- (ग) राज्ञा हस्तेन एव विसर्जितः।
- (घ) पार्थिवस्य वनगमननिवृत्तिः भविष्यति।
- (ङ) शरीरे अरिः प्रहरति।

4. अधोलिखितेषु संवादेशु कः कं प्रति कथयति इति लिखत-

| संवादः | कः कथयति? | कं प्रति कथयति |
|--|-----------|----------------|
| (क) एकशरीरसंक्षिप्ता पृथिवी रक्षितव्या। | | |
| (ख) अलमुपहतासु स्त्रीबुद्धिषु स्वमार्जवमुपनिक्षेप्तुम् | | |

| | | |
|--|-------|-------|
| (ग) नवनृपतिविमर्शो नास्ति शङ्का प्रजानाम् | | |
| (घ) रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम् | | |
| (ङ) न शक्नोमि रोषं धारयितुम् | | |
| (च) एनामुद्दिश्य देवतानां प्रणामः क्रियते | | |
| (छ) यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः | | |

5. पाठमाश्रित्य 'रामस्य' 'लक्ष्मणस्य' च चारित्रिक-वैशिष्ट्यं हिन्दी/अंग्रेजी/संस्कृतभाषया लिखत।
6. पाठात् चित्वा अव्ययपदानि लिखत, उदाहरणानि-ननु, तत्र।
7. अधोलिखितेषु पदेषु प्रकृति-प्रत्ययौ पृथक् कृत्वा लिखत-
परित्रातव्यः, वक्तव्यम्, रक्षितव्या, भवितव्यम्, पुत्रवती, श्रोतुम्, विसर्जितः, गतः, क्षोभितः, धारयितुम्।
8. अधोलिखितानां पदानां संस्कृत-वाक्येषु प्रयोगः करणीयः-
शरीरे, प्रहरति, भर्ता, अभिषेकः, पार्थिवस्य, प्रजानाम्, हस्तेन, धैर्यसागरः, पश्यामि, करेणुः, गन्तव्यम्।
9. अधोलिखितानां पद्यांशानां स्वभाषया भावार्थं लिखत-
(क) शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।
(ख) नवनृपतिविमर्शो नास्ति शङ्का प्रजानाम्।
(ग) यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयाम्।
(घ) यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः।
10. अधोलिखितपदेषु सन्धिच्छेदः कार्यः-
रक्षितव्येति, गुणेनात्र, शरीरेऽरिः, स्वजनस्तथा, येनाकार्यम्, खल्वस्मत्, किमप्यभिमतम् हस्तेनैव, दग्धुकामेव।

योग्यताविस्तारः

‘काव्येषु नाटकं रम्यम्’ इत्यनुभूय महाकवि-भासेन रमणीयत्वं प्रतिपादयता नाटकानि एव रचितानि। नाटकीयायाः परम्परायाः प्रवर्तनं भासादेव प्राप्यते। यद्यपि भासस्य प्रामाणिकं जीवन-वृत्तं नैवोपलभ्यते तथापि केचन विद्वांसः महाकविम् उज्जयिनीकम् मन्यन्ते। भासनाटकचक्रे-स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, प्रतिमानाटकम्, अविमारकम्, बालचरितम्, अभिषेकम्, पञ्चरात्रम्, मध्यमव्यायोगः, ऊरुभङ्गम्, दूतघटोत्कचम्, कर्णभारम्, दूतवाक्यम्, चारुदत्तम् च त्रयोदश नाटकानि गण्यन्ते।

प्रतिमानाटकम् – एतन्नाटकम् सप्ताङ्कपरिमितम् विद्यते। अस्मिन् रामवनवासादारभ्य रावणवधपर्यन्तं कथा वर्णिता वर्तते। मातुलगृहात् निवर्तमानः भरतः यदा मार्गे अयोध्यायाः पार्श्वे प्रतिमा-मन्दिरे दिवङ्गतेषु निजपूर्वजेषु महाराजस्य दशरथस्य प्रतिमां पश्यति तदा सः पितुः देहावसानविषये जानाति। तदैव रामरावणयोः युद्धस्य सन्देशः प्राप्यते, भरतः रामस्य सहायतार्थं सैन्यबलं प्रेषयति। प्रतिमया नाटके पितुः देहावसान सूचनायाः कारणात् अस्य नाटकस्याभिधानम् “प्रतिमानाटकम्” जातम्।

